संस्कृत कैसे सीखें? (समास)

How to Learn Sanskrit? (Samaas)

आकृति ठाकुर[1] एवं योगेश शर्मा[2]

Aakriti Thakur[1] and Yogesh Sharma[2]

[1]शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

[2]सह आचार्य, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakrititthakur2@gmail.com[1], ycsharma2000@yahoo.co.in[2]

https://doi.org/10.5281/zenodo.18442843

'सम्'

जैसा कि पूर्व के लेख में प्रतिपादित किया गया है कि समास पाँच प्रकार के होते हैं। उनमें से केवल समास एवं अव्ययीभाव समास का प्रतिपादन किया जा चुका है। प्रस्तुत लेख में तत्पुरुष समास का प्रतिपादन किया जा रहा है। जिस प्रकार अव्ययीभाव समास में पूर्व पद का अर्थ प्रधान होता है, ठीक उसी प्रकार तत्पुरुष समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, अर्थात् दो पदों में से बाद वाले पद की आकांक्षा महत्त्वपूर्ण होती है। तत्पुरुष समास सामान्यतः दो रूपों में देखा जाता है – (1) व्यधिकरण तत्पुरुष – इसके अन्तर्गत दोनों पदों (पूर्वपद एवं उत्तरपद) में असमान विभक्ति का प्रयोग होता है, (2) समानाधिकरण तत्पुरुष – इसके अन्तर्गत दोनों पदों (पूर्वपद एवं उत्तरपद) में समान विभक्ति का प्रयोग होता है। समानाधिकरण तत्पुरुष को ही कर्मधारय कहते है। कर्मधारय का एक भेद द्विगु है – जब संख्या पूर्वपद में हो तो द्विगु हो जाता है। व्यधिकरण तत्पुरुष के द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी एवं सप्तमी, ये छः भेद होते हैं। सर्वप्रथम व्याधिकरण तत्पुरुष को इस प्रकार देखा जा सकता है –

द्वितीया तत्पुरुष

द्वितीया विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पदों का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, गामी आदि सार्थक पदों के साथ समास होता है। जैसे – नगरं गामी = नगरगामी (नगर को जाने वाला)।

तृतीया तत्पुरुष

तृतीया विभक्ति से अनत होने वाले सार्थक पद का तृतीया विभक्ति के द्वारा किये गए गुणवाचक शब्द तथा अर्थ शब्द के साथ समास होता है। जैसे – सुधया धवलः = सुधाधवलम् (सुधा से धवल)। इसी प्रकार, तृतीया विभक्ति से अन्त होने वाले कर्ता अथवा करण के साथ कृदन्त पद का तृतीया तत्पुरुष समास होता है। जैसे – हरिणा त्रातः = हरित्रातः (हरि से रक्षित)।

चतुर्थी तत्पुरुष

चतुर्थी विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पद का उसी के अर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित शब्द के साथ समास होता है। जैसे – यूपाय दारुः = यूपदारुः (यूप के लिए लकड़ी)।

पञ्चमी तत्पुरुष

पञ्चमी विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पदों का भय, भीतः, भीतिः, भी, अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित आदि सार्थक पदों के साथ समास होता है। जैसे – चोराद् भयम् = चोरभयम् (चोर से भय)।

षष्ठी तत्पुरुष

षष्ठी विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पदों का सार्थक पदों के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे –

राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः। षष्ठी विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पदों का याजक, पूजक, परिचारक, परिवेषक, स्नातक, अध्यापक, उत्पादक, होतृ, पोतृ, भर्तृ आदि शब्दों के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है। जैसे – देवानां पूजकः = देवपूजकः (देवताओं की पूजा करने वाला)।

सप्तमी तत्पुरुष

सप्तमी विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पदों का शौण्ड आदि (शौण्ड, अधि, धूर्त, कितव, प्रवीण, संवित्, चतुर, पण्डित, कुशल, निपुण, चपल, पटु) शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे – अक्षेषु शौण्डः = अक्षशौण्डः (पासे खेलने में चतुर)। इसके अतिरिक्त सप्तमी विभक्ति से अन्त होने वाले सार्थक पदों का सिद्ध, शुष्क, पक्व और बन्ध आदि सार्थक पदों के साथ समास होता है। जैसे – रसे सिद्धः = रससिद्धः।

इस प्रकार, उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि व्यधिकरण तत्पुरुष में दोनों पदों में असमान विभक्ति का प्रयोग होता है और उसी के आधार पर समस्त पद के अर्थ का निर्धारण होता है।

क्रम सं.	लौकिक विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	कृष्णं श्रितः	कृष्णश्रितः	कृष्ण की शरण में आया हुआ
2.	दुःखम् अतीतः	दुःखातीतः	दुःख से परे
3.	कूपं पतितः	कूपपतितः	कुएँ में गिरा हुआ
4.	मार्गम् अत्यस्त	मार्गात्यस्तः	मार्ग में व्याप्त
5.	प्रलयं गतः	प्रलयगतः	प्रलय में गया हुआ
6.	भयम् आपन्नः	भयापन्नः	भय से आपन्न
7.	शाला प्राप्तः	शालाप्राप्तः	शाला को प्राप्त
8.	सशंयम् आपन्नः	संशयापन्नः	संशय से आपन्न
9.	ग्राम गतः	ग्राम गतः	ग्राम में गया हुआ
10.	अरण्यम् अतीतः	अरण्यातीतः	अरण्य से अतीत
11.	आपदां गतः	आपदागतः	आपदा में गया हुआ
12.	ग्रामं गमी	गामगमी	ग्राम को जाने वाला
13.	अन्नं बुभुक्षुः	अन्नबुभुक्षुः	अन्न के लिए भूखा
14.	सुखम् ईप्सुः	सुखेप्सुः	सुख के लिए इच्छुक
15.	प्राप्तः जीवनम्	प्राप्तजीवनः	प्राप्त हुआ जीवन
16.	क्षणं स्थायी	क्षणस्थायी	क्षण के लिए स्थायी
17.	शंकुलया खण्डः	शंकुलाखण्डः	सरौते से काटा हुआ टुकड़ा
18.	पुण्येन अर्थः	पुण्यार्थः	पुण्य के लिए अर्थ

19.	तेन कृतम्	तत्कृतम्	उसके द्वारा किया हुआ
20.	कालिदासेन रचितम्	कालिदासरचितम्	कालिदास द्वारा रचित
21.	प्रज्ञया हीनः	प्रज्ञाहीनः	प्रज्ञा से हीन
22.	आचरेण निपुणः	आचारनिपुणः	आचार से निपुण
23.	मात्रा सदृशः	मातृसदृशः	माता के सदृश
24.	क्षीरेण ओदनः	क्षीरौदनः	क्षीर के साथ ओदन
25.	शुना लेह्यः	श्वलेह्यः	ऐसा कुआ जिसका पानी कुत्ता जिह्वा से चाट ले
26.	कुण्डलाय हिरण्यम्	कुण्डलहिरण्यम्	कुण्डल के लिए सोना
27.	द्वाराय काष्ठम्	द्वारकाष्ठम्	द्वार के लिए लकड़ी
28.	इन्द्राय इयम्	इन्द्रार्था (हविः स्त्रीलिंग)	इन्द्र के लिए यह
29.	पित्रे इदम्	पित्रर्थम् (पयः नपुंसकलिंग)	पितरों के लिए यह
30.	शिशवे इदम्	शिश्वर्थम् (पयः नपुंसकलिंग)	शिशु के लिए यह
31.	द्विजाय अयम्	द्विजार्थः (सूपः पुलिंग)	ब्राह्मण के लिए दाल
32.	गवे रक्षितम्	गोरक्षितम्	गो के लिए रक्षित
33.	राष्ट्राय हितम्	राष्ट्रहितम्	राष्ट्र के लिए हितकर
34.	व्याघ्राद् भीतः	व्याघ्रभीतः	व्याघ्र से डरा हुआ
35.	ग्रामाद् निर्गतः	ग्रामनिर्गतः	गाँव से निकला हुआ
36.	अधर्माद् जुगुप्सुः	अधर्मजुगुप्सुः	अधर्म से जुगुप्सा करने वाला
37.	सुखाद् अपेतः	सुखापेतः	सुख से दूर
38.	स्वर्गात् पतितः	स्वर्गपतितः	स्वर्ग से गिरा हुआ
39.	तरंगाद् अपत्रस्तः	तरंगापत्रस्तः	तरंग से अपत्रस्त
40.	स्तोकाद् मुक्तः	स्तोकान्मुक्तः	स्तोक से मुक्त
41.	अभ्याशाद् आगतः	अभ्याशादागतः	अभ्यास से आया हुआ
42.	आत्मनो ज्ञानम्	आत्मज्ञानम्	आत्मा का ज्ञान
43.	मनसः स्थितिः	मनःस्थिति	मन की स्थिति
44.	भुवः पतिः	भूपतिः	भूमि का स्वामी

45.	देवस्य आलयः	देवालयः	देवता का आलय
46.	अर्थस्य गौरवम्	अर्थगौरवम्	अर्थ का गौरव
47.	संस्कृतस्य अध्यापकः	संस्कृताध्यापकः	संस्कृत का अध्यापक
48.	अर्धं वेद्याः	अर्धवेदिः	वेदी का आधा
49.	घटश्च उत्पादकः	घटोत्पादकः	घट का उत्पादक
50.	पणस्य अर्धम्	अर्धपणम्	आधा पर्ण
51.	पूर्वः अह्नः	पूर्वाह्णः	दिन का पूर्व भाग
52.	वीणायां प्रवीण	वीणा प्रवीणः	वीणावादन में प्रवीण
53.	काव्ये कुशलः	काव्य कुशलः	काव्य में कुशल
54.	पात्रे समिताः	पात्रेसमिताः	भोजनभट्ट
55.	गेहेशूरः	गेहेशूरः	घर का शूर
56.	कूपे मण्डूकः	कूपमण्डूकः	स्वल्पज्ञानी
57.	नगरे काकः	नगरकाकः	बातूनी
58.	भारते सिद्धः	भारतसिद्धः	भारत का सिद्ध
59.	वेदे पण्डितः	वेदपण्डितः	वेदों का ज्ञाता
60.	तीर्थे काकः इव	तीर्थकाकः	तीर्थ में काक के सदृश

समानाधिकरण तत्पुरुष को ही कर्मधारय कहा जाता है। समानाधिकरण की प्रक्रिया में विशेषण–विशेष्य एवं उपमान–उपमेय आदि के रूप देखने को मिलते हैं। इसके अन्तर्गत विशेष्य में प्रयुक्त होने वाली विभक्ति का प्रयोग विशेषण पद में भी आवश्यक माना जाता है। ठीक वैसे ही, उपमेय में प्रयुक्त होने वाली विभक्ति का प्रयोग उपमान में भी समान रूप से देखा जाता है। जैसे – नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम् (नीला कमल), घन इव श्यामः = घनश्यामः (मेघ के समान श्याम) आदि।

इसके अतिरिक्त, पूर्वकाल, एक, सर्व, जरत्, पुराण, नव, केवल आदि सार्थक पदों का समानाधिकरण सार्थक पदों के साथ समास होता है। जैसे – एका बालिका = एकबालिका (एक लड़की), पुराणः पुरुषः = पुराणपुरुषः (प्राचीन पुरुष) आदि।

इसके अतिरिक्त, पूर्व, अपर, प्रथम, चरम, जघन्य, समान, मध्य, मध्यम और वीर आदि विशेषण शब्दों का समानाधिकरण विशेष्य शब्दों के साथ कर्मधारय समास होता है। जैसे – पूर्वः पुरुषः = पूर्वपुरुषः (पहले का पुरुष)।

कर्मधारय समास सन्, महत्, परभ, उत्तम, उत्कृष्ट आदि पूजावाची विशेषण पदों का पूज्यवाची समानाधिकरण विशेष्य पदों के साथ संयोग होने पर भी होता है। जैसे – उत्तमः पुरुषः = उत्तमपुरुषः (श्रेष्ठ पुरुष)।

उपमानवाचक पदों का समान धर्म को धारण करने वाले सार्थक पदों के साथ कर्मधारय समास होता है। जैसे– कर्पूर इव गौरः = कर्पूरगौरः (कर्पूर के समान गौर वर्ण)। इसके अतिरिक्त, उपमेयवाचक पद का व्याघ्र आदि

उपमानवाचक पद के साथ तत्पुरुष समास हो जाता है, यदि साधारण धर्मवाचक पद का प्रयोग न हुआ हो तो। जैसे – पुरुषः व्याघ्रः इव = पुरुषव्याघ्रः (पुरुष जो व्याघ्र के समान है)।

व्यधिकरण एवं समानाधिकरण तत्पुरुष के अतिरिक्त तत्पुरुष समास के अन्तर्गत प्रादि तत्पुरुष भी महत्त्वपूर्ण समास है। इसके अन्तर्गत 'कु', 'गतिसंज्ञक शब्द' एवं 'प्र' आदि शब्द का समर्थ सार्थक शब्द के साथ नित्य समास होता है। जैसे – कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः (बुरा व्यक्ति)।

क्रम सं.	लौकिक विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	वृद्धश्चासौ व्याघ्रः	वृद्धव्याघ्रः	वृद्ध बाघ
2.	वृद्धश्च स व्याघ्रः	वृद्धव्याघ्रः	वृद्ध बाघ
3.	वृद्धश्च यो व्याघ्रः	वृद्धव्याघ्रः	वृद्ध बाघ
4.	सर्वाश्चामूः कलाः	सर्वकलाः	सभी कलाएँ
5.	सर्वाश्चताः कलाः	सर्वकलाः	सभी कलाएँ
6.	सर्वाश्च याः कलाः	सर्वकलाः	सभी कलाएँ
7.	सकलाश्च ताः कलाः	सकलकलाः	सकल कलाएँ
8.	नीलश्चाद् उत्पलम्	नीलोत्पलम्	नीला कमल
9.	नीलश्चा तद् उत्पलम्	नीलोत्पलम्	नीला कमल
10.	नीलश्च यद् उत्पलम्	नीलोत्पलम्	नीला कमल
11.	रक्तश्च तदुत्पलम्	रक्तोत्पलम्	लाल कमल
12.	पुण्यं च तत् तीर्थम्	पुण्यतीर्थम्	पुण्य तीर्थ
13.	विद्वांश्चासौ जनः	विद्वज्जनः	विद्वान् लोग
14.	निर्मलाश्च ते गुणाः	निर्मलगुणाः	निर्मल गुण
15.	पूर्वश्च तद् अर्धम्	पूर्वार्धम्	पूर्व आधा भाग
16.	परश्च तद् अर्धम्	परार्धम्	पर आधा भाग
17.	नवश्चासौ अवतारः	नवावतारः	नौ अवतार
18.	सन्तश्च ते पुरुषाः	सत्पुरुषाः	सज्जन पुरुष
19.	महांश्चासौ वृक्षः	महावृक्षः	महान् वृक्ष
20.	दीर्घा रज्जुः	दीर्घरज्जुः	लम्बी रस्सी
21.	उन्नतः वृक्षः	उन्नतवृक्षः	ऊँचा पेड़

22.	केवलाः वैयाकरणाः	केवलवैयाकरणाः	केवल वैयाकरण
23.	जघन्यः श्लोकः	जघन्यश्लोकः	जघन्य श्लोक
24.	अपरः मीमांसकः	अपरमीमांसकः	अपर मीमांसक
25.	वीरा बालिका	वीरबालिका	बहादुर लड़की
26.	महान् वैयाकरणः	महावैयाकरणः	महान् वैयाकरण
27.	सती नारीः	सन्नारीः	सज्जन स्त्री
28.	सन् पुरुषः	सत्पुरुषः	सज्जन पुरुष
29.	सन्तः जनाः	सज्जनाः	सज्जन लोग
30.	उत्कृष्टः वैधः	उत्कृष्टवैधः	अच्छे वैध
31.	कृतम् अकृतम्	कृताकृतम्	कृत और अकृत
32.	भुक्तम् अभुक्तम्	भुक्ताभुक्तम्	भुक्त और अभुक्त
33.	उदितम् अनुदितम्	उदितानुदितम्	उदित और अनुदित
34.	वज्रम् इव कठोरम्	वज्रकठोरम्	वज्र के समान कठोर
35.	शैलः इव उन्नतः	शैलोन्नतः	पहाड़ के समान उन्नत
36.	पण्डितः पुण्डरीक इव	पण्डितपुण्डरिकः	पुरुष जो पुण्डरिक के समान है
37.	पुरुषः ऋषभ इव	पुरुषर्षभः	पुरुष जो ऋषभ के समान है
38.	पञ्च च ते महायज्ञाः	पञ्चमहायज्ञाः	पाँच महायज्ञ
39.	सप्त च ते ऋषयः	सप्तऋषयः	सात ऋषियों का समूह
40.	पर्णनिर्मिता शाला	पर्णशाला	पर्ण से निर्मित शाला
41.	परशु प्रहरणो रामः	परशुरामः	परशु से युक्त राम
42.	अश्वयुक्तो रथः	अश्वरथः	अश्व से युक्त रथ
43.	न ब्राह्मणः	अब्राह्मणः	ब्राह्मण से इतर
44.	न धर्मः	अधर्मः	धर्म से विपरीत
45.	न आत्मा	अनात्मा	आत्मा से इतर
46.	न ईश्वर	अनीश्वर	ईश्वर से इतर
47.	न स्त्री न पुमान्	नपुंसक	न स्त्री न पुरुष

48.	कुत्सिता दृष्टिः	कुदृष्टिः	कुत्सित दृष्टि
49.	विरुद्धः पक्षः	विपक्षः	विपरीत पक्ष
50.	अनुगतः स्वारम्	अनुस्वारः	स्वर के पीछे जाने वाला

तत्पुरुष समास के अन्तर्गत ही द्विगु समास भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और वही द्विगु समास की विशेषता होती है। द्विगु समास समूहवाची अर्थ में एकत्व के प्रतिपादन हेतु प्रयुक्त होता है और सामान्यतः यह नपुंसकलिंग में प्रयोग होता है।

क्रम सं.	**लौकिक विग्रह**	**सामासिक शब्द**	**अर्थ**
1.	षण्णां मातृणाम् अपत्यम्	षाण्मातुरः	छः माताओं की सन्तति
2.	पञ्च गावः धनम्	पञ्चगवधनः	पाँच गायों वाला धन
3.	त्रयणां भुवनानां समाहारः	त्रिभुवनम्	तीन भुवनों का समूह
4.	पञ्चनां गवां समाहारः	पञ्चगवम्	पाँच गायों का समूह
5.	त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
6.	सप्तानाम् अह्नां समाहारः	सप्ताहः	सात दिनों का समूह
7.	पञ्च सखायः प्रियाः	पञ्चसखप्रियः	पाँच प्रिय मित्र
8.	पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्	पाँच पात्रों का समूह
9.	चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्	चार युगों का समूह
10.	अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समूह
11.	पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी	पाँच वृक्षों का समूह
12.	दशानां अब्दानां समाहारः	दशाब्दी	दश वर्ष
13.	पञ्चानां धेनूनां समाहारः	पंचधेनु	पाँच धेनुओं का समूह
14.	सप्तानां खटवानां समाहारः	सप्तखट्वम्/सप्तखट्वी	सात खाटों का समूह
15.	अष्टानां तक्ष्णां समाहारः	अष्टतक्षम्/अष्टतक्षी	आठ तराशा हुए पत्थरों का समूह
16.	अहंश्च रात्रिश्चानयोः समाहारः	अहोरात्रः	दिन और रात्रि
17.	सर्वा च आसौ रात्रिः	सर्वरात्रः	सभी रात्रियों का समूह
18.	पुण्या च आसौ रात्रिः	पुण्यरात्रः	पुण्य रात्रि
19.	तिसृणां रात्रीणां समाहारः	त्रिरात्रम्	तीन रात्रियों का समूह
20.	नवानाम् रात्रीणां समाहारः	नवरात्रम्	नौ रात्रियों का समूह

21.	परमः चासौ राजा	परमराजः	परम राजा
22.	महान् चासौ राजा	महाराजः	महान् राजा
23.	राज्ञः सखाः	राजसखः	राजा का मित्र
24.	कृष्णस्य सखाः	कृष्णसखः	कृष्ण का मित्र
25.	द्वे अंगुली प्रमाणस्य	द्वयंगुलम्	दो अंगुल प्रमाण वाली लकड़ी

इस प्रकार प्रस्तुत लेख में समास के स्वरूप, प्रकार एवं विशेषतः तत्पुरूष समास और उसके कर्मधारय एवं द्विगु आदि भेदों के प्रयोग पर विचार किया गया है। इसी प्रकार आगामी लेख में शेष बहुव्रीहि और द्वन्द्व समास–प्रकारों के स्वरूप एवं प्रयोग पर विचार किया जाएगा।

अनुवाद

1. नगरगामी लोकयानेन नगरं गच्छति।

   (नगरगामी लोकवाहन से नगर जाता है।)

2. सः शंकुलाखण्डः अस्ति।

   (वह सरौते से काटा हुआ टुकड़ा है।)

3. सर्वेषु राष्ट्रहितं प्रधानम्।

   (सभी में राष्ट्रहित प्रधान है।)

4. अत्र चोरभयमस्ति।

   (यहाँ चोर का भय है।)

5. महाराजः अत्र आगच्छति।

   (महाराज यहाँ आते हैं।)

6. भगवान् विष्णुः त्रिषु लोकेषु परमपुरुषः अस्ति।

   (भगवान् विष्णु तीनों लोकों में परम पुरुष हैं।)

7. अस्य महाविद्यालयस्य प्राचार्यः संस्कृतज्ञः अस्ति।

   (इस महाविद्यालय के प्राचार्य संस्कृत के ज्ञाता हैं।)

8. अष्टाध्यायी व्याकरणस्य प्रधानग्रन्थो अस्ति।

   (अष्टाध्यायी व्याकरण का प्रधान ग्रन्थ है।)

9. अर्जुनः जनमेजयस्य प्रपितामहो अस्ति।

   (अर्जुन जनमेजय के प्रपितामह हैं।)

10. सः सप्ताहपर्यन्त कार्यं करोति।

    (वह सप्ताहपर्यन्त कार्य करता है।)